E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
November 2021, Special Issue 03, Vol. IV

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ
For Details Visit To - www.almrj.com

Akshara Publication

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

SJIF Impact- 5.5

November 2021 Special Issue 03 Vol. IV

Sr.No	Title of the Paper & Author's Name	Pg.No
29	साहित्य में नारी चित्रण : मैत्रेयी पुष्पा के संदर्भ में- डॉ. काकासो बापूसो भोसले	103
30	'स्त्री मेरे भीतर' कविता संग्रह में चित्रित नारी संवेदना - प्रा. शैलजा टिळे	105
31	सामंतवादी बर्बरता को कुरेदता यथार्थ - डॉ. विकास विलासराव पाटील	108
32	'गिलिगडु' उपन्यास में अभिव्यक्त वृध्द विमर्श – डॉ. वैशाली विठ्ठल खेडकर	110
33	हिंदी साहित्य के स्त्री साहित्यकारों की कहानियों में स्त्री–विमर्श - प्रा. ज्ञानेश्वर किसन बगनर	113
34	हिंदी उपन्यास साहित्य में चित्रित नारी शोषण ('एक पत्नी के नोट्स' और 'विजन' उपन्यास के संदर्भ में) - डॉ.सविता शिवलिंग मेनकुदळे	115
35	समकालीन हिंदी कविताओं में चित्रित नारी विमर्श – लैफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील	119
36	ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'दो चेहरे'नाटक में अभिव्यक्त दलित चेतना - प्रा. जगन्नाथ आबासो पाटील	122
37	कुसुम कुमार और हरिशंकर परसाई के साहित्य में व्यंग्य (दिल्ली उँचा सुनती है, भोलाराम का जीव) -प्रा. डॉ. सौ. शकुंतला प्रताप वाघ	125
38	भगवानदास मोरवाल कृत 'रेत' उपन्यास मे ग्रामीण जीवन' -प्रा. सूर्यकांत विश्वनाथ आमलपुरे	127
39	हिंदी साहित्य में आदिवासी का चित्रण - डॉ. आर. पी. भोसले	129
40	महिला उपन्यासकारों के उपन्यासो में नारी के विविध रूप- प्रा. विश्वास निवृत्ती पाटील	131
41	मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'फैसला' एक मौन विद्रोह- अस्मिता अरविंद रुईकर डॉ.विजया ज. पिंजारी	134
42	काशिनाथ सिंह के 'महुआचरित' उपन्यास में शोषित वर्ग का चित्रण- सोमनाथ तातोबा कोळी	137
43	21वीं सदी में नारी शोषण के विविध रूप - प्रा नितीन हिंदुराव कुंभार	139
44	'साकेत' में कैकेयी का चित्रण - कालियानंतम पी.	143
45	हिंदी कहानी में दलित शोषण का चित्रण (प्रेमचंदकृत - ठाकुर का कुआं कहानी के विशेष संदर्भ में) - डॉ.बलवंत बी.एस	149
46	कमलेश्वर कृत 'अनबीता व्यतीत' उपन्यास में नारी चित्रण - प्राजक्ता राजेंद्र प्रधान / डॉ. अशोक मोहन मरळे	151
47	भारतीय का सबसे वंचित वर्ग : किसान (हिंदी कविताओं के परिप्रेक्ष्य में) - प्रा. मारूफ समशेर मुजावर	154
48	ज्योति जैन की कहानी में नारी अस्मिता का बदलता परिवेश - माधवी बसवानी पिटुक	157
49	दलित आत्मकथाओं में चित्रित भेदभाव - डॉ. प्रकाश आठवले	161
50	जगदंबा प्रसाद दीक्षित और मधु मंगेश कर्णिक के उपन्यासों में महानगरीय परिवेश की यथार्थता का तुलनात्मक अध्ययन - सौ.वृषाली महादेव माळी	165
51	'फाँस' किसान जीवन की संघर्षगाथा - डॉ. सचिन राजाराम जाधव	170

E-ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5.54
November 2021 Special Issue 03 Vol. IV

35

समकालीन हिंदी कविताओं में चित्रित नारी – विमर्श

लेफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील,
राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज, कोल्हापुर,
मेल : rcpatilshahu@gmail.com मो.: ९५५२५६४२४४/९३०७१४४०६५

हिंदी साहित्य के अंतर्गत १९७० के बाद जो परंपरा चली उसे 'समकालीन' साहित्य कहा गया। समकालीन साहित्य के रचनाकारों में शोषक वर्गों के विरुद्ध विद्रोह की भावना दिखाई देती है। राजनेता, शासक, प्रशासक व्यवस्था आदि बातें केंद्र में दिखाई देती है। समकालीन कविता में स्वातंत्र्य एवं मुक्ति के स्वर स्पष्ट रूप से दिखाई देते है। सन १९९० के बाद साहित्य में अनेक परिवर्तन दृष्टिगोचर होते है। इस समय नारी जीवन में भी भारी मात्रा में बदलाव आया। भुमंडलीकरण, बाजारवाद उपभोक्तावादी संस्कृति आदि के कारण मनुष्य के जीवनमूल्य बदले। स्त्री का जीवन अधिक बदत्तर होता चला गया। इस दौर में स्त्री कुछ बंधनों से मुक्त जरूर हुई परंतु वह एक वस्तु और विनिमय की चीज बनी। उसका मूल्य सिर्फ शारीरिक आकर्षण के लिए निहित हुआ। उसे उपभोग्य की वस्तु के रूप में देखा गया।

समकालीन कवियों में केदारनाथ सिंह का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है। केदारनाथ सिंह समकालीन कविता के संदर्भ में अपना मंतव्य प्रकट करते हुए कहते हैं, "चीजे एक ऐसे दौर से गुजर रही हैं, कि मेज को सीधे मेज कहना उसे अपराधियो के बीच में रख देना है। ....खुशामद आजकल शालीनता माती और स्वार्थपरता होशियारी नैतिकता के मानदंड अंशतः बदले ही है और नए रचनाकारों ने उन्हें धार दी है।" उत्तरशर्ती के पूर्वार्ध तक आते-आते समकालीन साहित्य अन्य विविध विमर्श की तरह स्त्री विमर्श की चर्चा भी जोरो से होने लगी। हिंदी के विविध साहित्यकारों ने नारी जीवन की वास्तविकता का चित्रण किया। जिनमें शुमिल, मंगेश डबराल, चंद्रकांत देवताले, लीलाधर जुगड़ी, अनामिका, चंद्रकांता प्रभा खेतान आदि के नाम सम्मान के साथ लिया जा सकता है।

समकालीन कवित्रियों में अनामिका बहुत ही चर्चित है। उनकी 'खुरदुरी हथेलियाँ' संग्रह नारी जीवन की जिवंत दस्तावेज है। पुरुष प्रधान संस्कृति ने स्त्री को कभी समझा ही नहीं। वह स्त्री को मात्र अपने उपभोग की वस्तु मानते हैं। इस व्यवस्था पर अनामिका जी व्यंग प्रहार करती हुई लिखती है, "अपनी जगह से गिरकर / कहीं के नहीं रहते / केश, औरतें और नाखून / अन्वय करते थे किसी श्लोक का ऐसे / हमारे संस्कृत टीचर।"[1]

अर्थात: जब हम बाल सँवारते है, तब टूटे बालों को बिना सोचे फेंक देते हैं। नाखून बढ़ने पर काटकर फेंकते हैं। ठिक उसी प्रकार समाज में नारी की अवस्था हुई है। स्त्री-भ्रूण हत्या जैसी बातें इसी बात को उजागर करती है। अगर बारीकी से देखा जाय तो इस व्यवस्था में जितना दोष पुरुषों का है उतना ही दोष स्त्रीयों का भी है। पुरुष प्रधान संस्कृति के मापदंडों को जैसे के तैसे स्वीकारने काम स्त्री ही करती है। अनामिका कहती हैं स्त्री का कोई निश्चित स्थान नहीं होती वह अपने पिता के घर में पलती है, शादी के बाद वह पति के घर चली जाती है, बच्चों का पालन पोषण करने में उसकी सारी जिंदगी निकल जाती है। बचपन से माँ-बाप के घर में ही वह भेदभाव का शिकार हो जाती है- "राम पाठशाला जा। / राधा खाना पका। / राम आ बताशा खा। / राधा झाडू लगा। / भैया अब सोएगा। / जाकर बिस्तर बिछा।"[2]

अंध आधुनिकता और भुमंडलीकरण के चलते वर्तमान समय में ससुरालवालों को सब कामों में पारंगत बहु चाहिए। उन्हें लगता है कि घर की बहु घर परिवार के परंपरागत कामों के साथ-साथ नौकरी भी करें और घर के खर्चे में अपना सहयोग भी दें। इन्हीं अपेक्षाओं ने स्त्री के जीवन को अधिक दयनीय बना दिया है। सुबह से श्याम तक वह बिना थके निरंतर काम करती रहती है परंतु उसे ओ सम्मान नहीं मिलता जो उसे मिलना चाहिए। परिवार के सूख को ही वह अपना सूख मान लेती है। इतना कुछ बलीदान देने के बावजुद भी उसका जीवन 'तोडती पत्थर' जैसी है। इस प्रसंग का वर्णन करते हुए कवयत्रि लिखती है,

"जैसे की मजदूरनी
तोडती है पत्थर

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5.54
November 2021 Special Issue 03 Vol. IV

मैंने तोड़ा खुद को
कूट-कूट कर।"[3]

स्त्री को अपना पूरा जीवन पुरुष प्रधान संस्कृति के साये में बितानी पड़ती है। वह जब तक गृहस्वामी के आदेशों का पालन करती है तब उसका स्थान गृहलक्ष्मी रहेगी। जब वह विद्रोह करेगी अपने अधिकारों पर बोलेगी तो उसका परिणाम भी भुगतेगी। इस प्रसंग का चित्रण करते हुए कवयत्री लिखती है - "पीठ नीली / चेहरा पीला / लाल आँखे और / जख्म हरे।"[4]

अत: अनामिका ने अपने कविता के माध्यम से स्त्री-जीवन के वास्तविकता को उजागर किया है। उन्होंने स्त्री-विमर्श के आधारभूत तथ्यों को खोज निकाला है। अत: निष्कर्षत: हम कह सकते है कि अनामिका की कविताएँ स्त्री-विमर्श की जिवंत दस्तावेज है।

कात्यायनी के अनुसार समकालीन कविताओं में चित्रित नारी ने अपने जीवन की वास्तविकता को उद्घटित किया है। कात्यायनी के "औरत और घर" कविता में यह प्रसंग चित्रित है,

"घर को हिफाजत के साथ घर बनाए हुए,
उसे भूतों का देश बनने से जतनपूर्वक बचाते हुए
घर में सुरक्षापूर्वक
होने का एहसास एक
बेहद नशीली शराब की तरह पीती रही।"[5]

अत: हम कह सकते है कि नारी अपने जीवन में एक कलाकार की तरह जीती है। वह ममतामयी माँ बनकर, पत्नी बनकर, वह अपने मन में हजारो सपने संजोग कर आशा भरी नजरों से जीवन स्थापन करती रहती है।इतना सबकुछ करने के बावजुद भी वह शोषण का शिकार हो जाती है। उसे हर कसोटी पर खरा उतरना पडता है। भारतीय पितृसत्ताक समाज व्यवस्था में एक सफल दाम्पत्य उसे ही कहा जाता है जिसे संतान प्राप्त है। चाहे इसके लिए स्त्री को अपने जीवन समाप्त भी करना पडे तो भी कोई पूछनेवाला नहीं है। बहुचर्चित कवयत्री वीणा सिन्हा के कविता 'तुम्हें जाना है मैंने', में ऐसे ही एक प्रसंग का सजीव चित्रण हुआ है। इस कविता में चित्रित एक स्त्री सदियों से बांझ है। वह पुत्र प्राप्ति के लिए अनेक प्रयत्न करती है। वह ओझा-पीरों, मंदिर-मस्जिद आदि जगहों पर चक्कर लगाती है। उसे संतान प्राप्ति नहीं होती। अंत में वह हॉस्पिटल में जाकर इलाज करवाती है और गर्भवती होती है। इतना कुछ होने के बावजुद भी अपनी मन्नते उतारने के लिए सातवे महिने तक घुमती रहती है परिणाम के चलते उसे काफी तकलिफों का सामना करना पडता है।अंत में मरे हुए बच्चे को जन्म देती है। समाज में फैली रुढि-परंपरा और अंधविश्वास के कारण उसे अपना बच्चा खोना पडता है। इस प्रसंग का चित्रण करते हुए कवयत्री लिखती है,

"बीसवीं सदी के आखिरी दशक की छाती पर
मेरे बच्चे को पटक कर
स्त्रीत्व को सिद्ध
करते गुजर गई वह औरत।"[6]

दुनिया में भारतीय नारी की पहचान विशेष महत्व रखती है। वह सरल-सहज और अपने परिवार के प्रति अपना सबकुछ नौछावर करनेवाली है। इसमें ही वह धन्यता मानती है। इसके संदर्भ में चंद्रकात देवताले अपनी कविता 'पर कम खुदा न थी परोसनेवाली' उजागर करते हैं, "पर कम खुदा न थी परोसनेवाली / बहुत है अभी इसमें या / मैंने तो देर से खाया / कहते परोसती जाती / माँ थी / सबके बाद खानेवाली / जिसके लिए दाल नहीं / देचकी में बची थी हलचल / चुल्लु भर पानी की / और कटोर –दान में भाफ के चंद्रमा जैसी / रोटी की छाया थी।"[7]

वर्तमान परवेश के चलते नारी के सोच में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। आधुनिक नारी ने उच्च शिक्षा ग्रहण करके अपने हक्कों के लिए लड रही है। वह पूरानी रुढि परंपराओं के खिलाफ आवाज उठा रही है। वह अबला से सबला बनने की कोशिश में जुडी है। वह आज पितृसत्ताक समाज के रुढियों का विरोध कर रही है। वह आज अन्याय अत्याचार के खिलाफ आवाज उठा रही है। वह अपनी बात पूरे दमखम के साथ समाज के सामने रख रही है। आनेवाली चुनैतियों से पूरी ताकत के साथ

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5.54
November 2021 Special Issue 03 Vol. IV

लड रही है। वह परिवार और समाज के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। वह समय आनेपर दुर्गा का रूप धारण करने से भी नहीं हिचकिचाती है। यह बात राजेश जोशी के काव्य पंक्तियों से अधिक स्पष्ट होती है, "रैली में चलती स्त्री / जैसी ब्रह्मांड में अनथक चलती पृथ्वी को देखना है /बाहर वह जितनी दिख रही है / उससे उसके सपनों और उसके भीतर /मची उथल-पुथल का अनुमान लगाना नामुमकिन है / उसकी आँख में असमय चला आया आँसू / उसकी हार का नहीं / उसके गुस्से का बाँध दरक जाने का संकेत है।"

अत: निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि प्राचीन काल से लेकर आज वर्तमान काल तक नारी का जीवन दयनिय एवं संघर्षपूर्ण रहा है। वर्तमान परिवंश में कुछ हद तक नारी ने शिक्षा के अधिकार प्राप्त की है। इसी के चलते रुढि परंपराओं के खिलाफ आवाज उठा रही है। वह अब अबला से सबला बनने में ज्युटी है। आनेवाली चुनौतियों का डटकर सामना कर रही है।

संदर्भ संकेत

1. अनामिका, खुरदुरी हथेलियाँ, बेजगह राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ १५.
2. वही पृष्ठ १५.
3. अनामिका, खुरदुरी हथेलियाँ, गृहलक्ष्मी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ ४२.
4. अनामिका, टूटी बिखरी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ ४६.
5. कात्यायनी, इस पौरुष समय में, पृष्ठ ६७.
6. सिन्हा वीणा, तुम्हें जाना है मैंने, पृष्ठ ६३.
7. चंद्रकांत देवताले, उजाड में संग्राहलय, पृष्ठ ३३.
8. राजेश जोशी, चाँद की वर्तनी, पृष्ठ ३३.

■ ■ ■